



Sundara Vee Raju: 6th century,historical site,Madku Dweep





Sundara Vee Raju: 6th century,historical site,Madku Dweep



Sundara Vee Raju: 6th century,historical site,Madku Dweep

सत्यमेव जयते नानृतं,
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो हयाप्तकामा,
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥

मुण्डकोपनिषद् | प्रथमखण्ड | षष्ठ मन्त्र
अर्थात्-सत्य की विजय होती है, असत्य की नहीं।
परमात्मा सत्यरूप है, अतः उनकी प्राप्ति के लिये
मनुष्य में सत्य की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। जगत् के
अत्य सब कार्यों में भी अन्ततः झूठ नहीं सच्चाई
ही जीती है। यही देवयान अर्थात् देवपथ है,
जो कि सत्य से परिपूर्ण है। यही परमात्मा
का परम धाम है। इसी मार्ग से पूर्ण
इच्छाओं वाले अर्थात् सन्तुष्ट ऋषिगण
माना-जाना करते हैं।

॥ परम सत्य ॥

मदकूट-मांडूक्य ऋषि की तपःस्थली रही है।

सत्यमेव जयते नानृतं,
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो हयाप्तकामा,
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥

मुण्डकोपनिषद् | प्रथमखण्ड | षष्ठ मन्त्र
अर्थात्-सत्य की विजय होती है, असत्य की नहीं।
परमात्मा सत्यरूप है, अतः उनकी प्राप्ति के लिये
मनुष्य में सत्य की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। जगत् के
अत्य सब कार्यों में भी अन्ततः झूठ नहीं सच्चाई
ही जीती है। यही देवयान अर्थात् देवपथ है,
जो कि सत्य से परिपूर्ण है। यही परमात्मा
का परम धाम है। इसी मार्ग से पूर्ण
इच्छाओं वाले अर्थात् सन्तुष्ट ऋषिगण
माना-जाना करते हैं।

॥ परम सत्य ॥

मदकूट-मांडूक्य ऋषि की तपःस्थली रही है।

सांस्कृतिक सूचना-पट्ट

नीरा शिवनाथ नदी से परिवृत्त और जैव-विविधता से परिपूर्ण यह
रूप से माण्डूक्य ऋषि की तपोस्थली होने के कारण अपने मदकू
ता है। मदकू-द्वीप को आदि काल से इसलिए पवित्र स्थल माना
यहाँ पर आकर शिवनाथ नदी की धाराएँ ईशान कोण में बह
दिशा वास्तुशास्त्र के अनुसार सबसे पवित्र दिशा मानी ज
से कुछ प्राचीन प्रतिमाएँ और स्थापत्य खण्ड यथा योनि
तपुरुष, योद्धा, आमलक और कलश आदि प्रकाश में आ
धार पर इस द्वीप-खण्ड पर अनेक प्राचीन मंदि
दबे होने के संकेत मिलने लगे थे।

रातात्विक वैभव को प्रत्यक्ष करने हेतु संस्कृति
गढ़ शासन द्वारा इस स्थल का पुरातात्विक उत्
वर्ष-2011 में किया गया। उत्खनन के पश्चात ब
ने का समूह और अनेक प्रतिमाएँ उद्घाटित हुई
1वीं से 14वीं सदी ई. मध्य (कल्चुरी काल) आंकी
ह में स्मार्तलिंग और योनिपीठ स्थापित हैं। एक-
गरुडारूढ़ लक्ष्मी-नारायण को समर्पित है। मां
र पश्चिमाभिमुखी है तथा उसके दोनों ओर के
में क्रमशः छोटे होते जाते हैं।

सांस्कृतिक सूचना-पट्ट

सदासीया शिवनाथ नदी से परितु और जैव-विविधता से परिपूर्ण यह सुसुर्य द्वीप परम्परागत रूप से माण्डव्य ऋषि की तपोस्थली होने के कारण अपने मद्रु द्वीप नाम को सार्थक करता है। मबक द्वीप को आदि काल से इसलिध पवित्र स्थल माना जाता रहा है क्योंकि यहाँ पर आकर शिवनाथ नदी की धाराएं ईशान कोण में बहने लगती हैं और यह दिशा वास्तुशास्त्र के अनुसार सबसे पवित्र दिशा मानी जाती है। पूर्व में यहाँ से कुछ प्राचीन प्रतिमाएँ और स्थापत्य खण्ड तथा योतिपीठ, गणेश, नन्दी, राजपुरुष, योद्धा, आमलक और कलश आदि प्रकारा में आए थे जिनके आधार पर इस द्वीप-खण्ड पर अनेक प्राचीन मंदिरों के भग्नावशेष दबे होने के संकेत मिलने लगे थे।

यहाँ के पुरातात्विक वैभव को प्रत्यक्ष करने हेतु संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, धर्मासुरमर्दिनी, योद्धा आदि उल्लेखनीय हैं। इस स्थान की सबसे विशिष्ट संरक्षण का कार्य वर्ष 2011 में किया गया। उत्खनन के परचात बलुआ प्रस्तर निर्मित 19 मंदिरों का समूह और अनेक प्रतिमाएँ उद्घाटित हुई हैं। जिनकी तिथि लगभग 11वीं से 14वीं सदी ई. मध्य (कलचुरी काल) आंकी गई है। जिनकी मंदिरों के गर्भगृह में स्मालिंग और योतिपीठ स्थापित हैं। एक-एक मंदिर अमाहेश्वर और गरुडाक्षर लक्ष्मी-नारायण को समर्पित हैं। मंदिरों में मध्य का सबसे बड़ा मंदिर पश्चिमाम्बुजी है तथा उसके दोनों ओर के मंदिर पूर्वाम्बुजी है तथा आकार में क्रमशः छोटे होते जाते हैं।

यहाँ से प्राप्त मूर्तियों में वेणुवादक कृष्ण, अम्बिका, नृत्य गणेश, महिषासुरमर्दिनी, उपानास राजपुरुष, योद्धा आदि उल्लेखनीय हैं। इस स्थान की सबसे विशिष्ट उपलब्धि बारह स्मालिंगों का प्राप्त होना है। इससे यह सिद्ध होता है कि कलचुरी काल में यह स्थान स्मार्त पूजा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र होने के साथ-साथ धर्मसहिष्णुता का जीवंत उदाहरण था।

अनेक मंदिरों के सामने राजपुरुषों की उपासक मुद्रा में प्रतिमाएँ मिली हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि रतनपुर के कलचुरी शासकों के वंशजों ने यहाँ पर मंदिरों का निर्माण करवाया था। राजा प्रतापमल्लदेव (ई.सन् 1198 से 1218) का तांबे का एक सिक्का भी प्राप्त हुआ है। उत्खनन से ज्ञात हुआ कि यह प्राचीन देवसंकुल नदी की बाढ़ के कारण ध्वस्त हो गया था।

अरुण कुमार शर्मा
पुरातत्वीय सलाहकार
धर्मासुरमर्दिनी



Sundara Vee Raju: 6th century, historical site, Madhu Dweep

यहाँ से प्राप्त मूर्तियों में वेणुवादक कृष्ण, अम्बिका, नृत्य गणेश, महिषासुरमर्दिनी, उपानास राजपुरुष, योद्धा आदि उल्लेखनीय हैं। इस स्थान की सबसे विशिष्ट उपलब्धि बारह स्मालिंगों का प्राप्त होना है। इससे यह सिद्ध होता है कि कलचुरी काल में यह स्थान स्मार्त पूजा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र होने के साथ-साथ धर्मसहिष्णुता का जीवंत उदाहरण था।

अनेक मंदिरों के सामने राजपुरुषों की उपासक मुद्रा में प्रतिमाएँ मिली हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि रतनपुर के कलचुरी शासकों के वंशजों ने यहाँ पर मंदिरों का निर्माण करवाया था। राजा प्रतापमल्लदेव (ई.सन् 1198 से 1218) का तांबे का एक सिक्का भी प्राप्त हुआ है। उत्खनन से ज्ञात हुआ कि यह प्राचीन देवसंकुल नदी की बाढ़ के कारण ध्वस्त हो गया था।

अरुण कुमार शर्मा
पुरातत्वीय सलाहकार
धर्मासुरमर्दिनी

सांस्कृतिक सूचना-पट्ट

सदासीया शिवनाथ नदी से परितु और जैव-विविधता से परिपूर्ण यह सुसुर्य द्वीप परम्परागत रूप से माण्डव्य ऋषि की तपोस्थली होने के कारण अपने मद्रु द्वीप नाम को सार्थक करता है। मबक द्वीप को आदि काल से इसलिध पवित्र स्थल माना जाता रहा है क्योंकि यहाँ पर आकर शिवनाथ नदी की धाराएं ईशान कोण में बहने लगती हैं और यह दिशा वास्तुशास्त्र के अनुसार सबसे पवित्र दिशा मानी जाती है। पूर्व में यहाँ से कुछ प्राचीन प्रतिमाएँ और स्थापत्य खण्ड तथा योतिपीठ, गणेश, नन्दी, राजपुरुष, योद्धा, आमलक और कलश आदि प्रकारा में आए थे जिनके आधार पर इस द्वीप-खण्ड पर अनेक प्राचीन मंदिरों के भग्नावशेष दबे होने के संकेत मिलने लगे थे।

यहाँ के पुरातात्विक वैभव को प्रत्यक्ष करने हेतु संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, धर्मासुरमर्दिनी, योद्धा आदि उल्लेखनीय हैं। इस स्थान की सबसे विशिष्ट संरक्षण का कार्य वर्ष 2011 में किया गया। उत्खनन के परचात बलुआ प्रस्तर निर्मित 19 मंदिरों का समूह और अनेक प्रतिमाएँ उद्घाटित हुई हैं। जिनकी तिथि लगभग 11वीं से 14वीं सदी ई. मध्य (कलचुरी काल) आंकी गई है। जिनकी मंदिरों के गर्भगृह में स्मालिंग और योतिपीठ स्थापित हैं। एक-एक मंदिर अमाहेश्वर और गरुडाक्षर लक्ष्मी-नारायण को समर्पित हैं। मंदिरों में मध्य का सबसे बड़ा मंदिर पश्चिमाम्बुजी है तथा उसके दोनों ओर के मंदिर पूर्वाम्बुजी है तथा आकार में क्रमशः छोटे होते जाते हैं।

यहाँ से प्राप्त मूर्तियों में वेणुवादक कृष्ण, अम्बिका, नृत्य गणेश, महिषासुरमर्दिनी, उपानास राजपुरुष, योद्धा आदि उल्लेखनीय हैं। इस स्थान की सबसे विशिष्ट उपलब्धि बारह स्मालिंगों का प्राप्त होना है। इससे यह सिद्ध होता है कि कलचुरी काल में यह स्थान स्मार्त पूजा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र होने के साथ-साथ धर्मसहिष्णुता का जीवंत उदाहरण था।

अनेक मंदिरों के सामने राजपुरुषों की उपासक मुद्रा में प्रतिमाएँ मिली हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि रतनपुर के कलचुरी शासकों के वंशजों ने यहाँ पर मंदिरों का निर्माण करवाया था। राजा प्रतापमल्लदेव (ई.सन् 1198 से 1218) का तांबे का एक सिक्का भी प्राप्त हुआ है। उत्खनन से ज्ञात हुआ कि यह प्राचीन देवसंकुल नदी की बाढ़ के कारण ध्वस्त हो गया था।

अरुण कुमार शर्मा
पुरातत्वीय सलाहकार
धर्मासुरमर्दिनी



Sundara Vee Raju: 6th century, historical site, Madku Dweep





Sundara Vee Raju: 6th century, historical site, Madku Dweep







Sundara Vee Raju: 6th century,historical site,Madku Dweep







**Madku Dweep (chathisghar,India.
visit
by**

sundara veerraju

suvera786@gmail.com



Sundara Vee Raju: 6th century,historical site,Madku Dweep

